वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

सितम्बर – 2014

* अन्य वचन
* हम मनुष्यों की कृपा पात्र अवस्था
* एक चिराग और बुझ गया
* हमारे बच्चों का भविष्य
* अकेले आदमी की ताकत को समझिए
* दयामयी गौ – माता
* पाठकों के विचार
* अमरीका में शुभ संग्राम

अन्य वचन

अंह अनुरागी जन कभी भी अपने विषय में यह विचार नहीं कर सकता कि मुझ में कौन कौन से आत्मिक रोग हैं? वह यह समझता है कि मैं जो कुछ जानता हूं, वह ठीक जानता हूं। वह सत्य को लात मारता है। वह हर समय झूठ में रहना चाहता है। उसकी बुराई पर यदि कोई चोट लगाई जावे, तो वह सांप की मानिन्द फन निकालता है। अंह अनुरागी के लिए इस दुनिया और अगली दुनिया में केवल पतन ही पतन है (देवत्वसिंह जी जब अंह अनुराग को आत्म घातक रूप में देखकर उससे मोक्ष पाने के संग्राम में लग हुए थे, तभी उनकी बेहतरी का ठीक क्रम चल सका था) हमारे संबंध में जिनके भीतर कुछ भी घृणा पैदा हो जाती है, अथवा जो लोग हम से फट जाते हैं, वह हमारे सम्बन्ध में कोई सच्चा साधन नहीं कर सकते। हां यदि पहले कभी वह ऐसा साधन करते भी हों, तो ऐसी अवस्था के आने पर उनका वह साधन बन्द हो जाता है। ऐसे लोगों को दूसरों की कोई खूबी देखना पसन्द ही नहीं होता, इसलिए उनके हित के सब दरवाजे बन्द रहते हैं।

नेचर का यह नियम है कि जिस चीज़ को तुम प्रेम करोगे, उस के तरफदार बन जाआगे। मनुष्यों में जो सबसे बड़ा नीच अनुराग फैला हुआ है, वह अंह अनुराग है। इस अंह अनुराग या 'मैं' के खिलाफ यदि किसी को कुछ कहो, तो वह उलट पुलट हो जाता है। वह दूसरे के सामने घटिया नज़र आना नहीं चाहता। उसकी तारीफ करो, तो वह खुश मालूम होता है, उस का चेहरा फूल की न्याईं खिल जाता है, उसके खिलाफ कहो, तो चेहरा फक़ हो जाता है, रंग फीका पड़ जाता है। हमने जो उसकी 'मैं' पर सदमा लगाया, इस सदमे को खाकर वह हमें घूरता है। देवात्मा के भीरत 'मैं' का प्रेम कुछ भी नहीं है और न ही उस में किसी आदमी के लिए कोई प्रेम है। फिर तुम यह कह सकते हो कि आप हम नीच आदमियों से दुःख पाते हैं, आप हमें छोड़कर भाग क्यों नहीं जाते? इसलिए कि नेचर हमें भागने नहीं देती। हम रात भी तड़पते रहे हैं, फिर भी यहां पर आकर बैठ गए हैं। तुम्हारा भला करने में दुःख मिलता है, रोग मिलते हैं, परन्तु फिर भी नेचर यही कहती है कि तुम बेशक रोगों को अपने सिर पर लो, परन्तु तुम्हें भला करना ही होगा। मनुष्य न सचाई चाहता है, न भलाई। नेचर की यह इजाजत नहीं कि वह गरम मसाले खाए परन्तु वह खाता है। नेचर कहती है कि चाय न पीयो, वह हानिकारक है, परन्तु वह कहता है कि मुझे तो बड़ा रस आता है। नेचर कहती है कि नमक न खाओ, वह हानिकारक है। पशु पक्षी बिना नमक के जीते हैं। देवात्मा इतने बूढ़े होकर भी बिना नमक के जीते हैं। परन्तु वह कहता है कि में नमक नहीं छोड़ सकता। हर एक नीच अनुराग का पक्षपाती बनकर वह इसी प्रकार का जवाब देने के लिए लाचार है।

धर्म जीवन

खण्ड 27 अंक 9
सितम्बर – 2014
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हम मनुष्यों की कृपा – पात्र अवस्था

कहने सुनने को तो मनुष्य अशरफ - उल - मख़लूकात या सब से श्रेष्ट प्राणी है। नेचर ने उसको अद्भुत बुद्धि के चिराग भी बख़्शे हैं, जिसके कारण उसने नेचर की महा विशाल भौतिक विशालता को जाना और खोजा। मनुष्य ने नेचर के अटल नियमों को जानकर इस नेचर के अन्धे भौतिक जगत को ही अजब ढंग से सजाया और संवारा है, यह सारी चकाचौंध अवर्णिनिय है। अपने लिए जंगली और वहिशी अवस्था में से निकल कर क्या क्या सुख स्वादों के समान जुटाए हैं, चारों जगतों के सुधार और विकास का सैलाब ला रखा है, उस सारे को जानना वा समझना और वर्णन - करना असम्भव है। वह पृथ्वी, हवा आकाश और पानी पर अपना अधिकार जमाए बैठा हैं, विज्ञान, टैकनौलाजी, कला कौशल, कंप्यूटर, विद्या के द्वारा जो जो अद्भुत लीला यह प्रगट करता जा रहा है, उस सब को देखकर स्वंय ही अवाक रह जाता है। परन्तु इतना सब कुछ होकर भी इस विषाल नेचर के शहनशाह की स्वंय की अवस्था महा दायनिय वा कृपा - पात्र है।

मनुष्य सब जीवों की तरह जीना चाहता है और सुख से जीना चाहता है। जहां तक सुख स्वादों का सम्बन्ध है, वह तो उसने अथाह मात्रा में जुटा लिए हैं, परन्तु जहां तक उसकी अपनी हस्ती की सुरक्षा और जीने का सम्बन्ध है, उस लिहाज़ से वह न केवल महा असुरक्षित है, महा दुखी भी है और अपनी हस्ती के विचार से जिन्दा और कायम रहने के विचार से अभी कोसों दूर है। मकड़ी की तरह वह अपने सुख स्वादों का इतना लम्बा चौड़ा महा विशाल ताना बाना अपने इर्द गिर्द बुनकर ऐसे चक्रव्यूह में फंस रहा है, जहां उसने अपने जिन्दा रहने की, अपनी हस्ती को बरकरार रखने की, सुरक्षित करने की सारी सुध बुध ही खो ली है। वह सुख स्वादों के चाट के साथ इतना लतपत और लीन हो गया है, जहां अपने जीते रहने का या अपने आपको जिन्दा रखने का ख़्याल तक भी वह पूरी तरह विसार रहा है।

अरबों की गिणती में मजदूर लोग हैं। वह अधिकतर अपने और अपने परिवार की पालना पोषणा करने में व्यस्त वा चिन्तित रहते हैं, उनके लिए अपनी वा अपने कुटम्ब की सेहत, शिक्षा आदि के लिए सोचना असम्भव के लगभग होता है। तो फिर अपनी आत्मिक प्रकृत अवस्था, उसके ज्ञान आदि का ख़्याल तक आना कठिन ही नहीं असम्भव है ही। अनपढ़ता, जहालत और निम्न दर्जे की संगत के कारण उन्हें अपनी शारीरिक मेहनत के लिए बीड़ी, सिगरेट, जरदा भुक्की, पान मसाला आदि मृत्यु दायक वस्तुएं ही

अपने लिए सहायक वा लाभदायक लगती हैं। उससे उनकी बुद्धि और मारी जाती है, उन्हें असमय ही संसार को अलविदा कहना पड़ता है।

मजदूर वर्ग से आगे जिस मानव वर्ग के पास कुछ सोचने, समझने, आदि के लिए समय होता हैं, उन्हें शारीरिक सुखों की गहरी लालसा के भारी पत्थर अपनी चाट के आगे कुछ सोचने समझने नहीं देते। नशे, शराब, अफीम, सिगरेट और ड्रगज़ के नशे बहुत सीमा तक मानव वर्ग को अपना कैदी वा गुलाम बनाए रखते हैं और इन लालसाओं की आग जंगल की आग की तरह फैलकर सारी मानवता को अपनी चपेट में ले रही है। मनुष्य उन लालसाओं के चंगुल में फंसे रहकर अपनी सुध बुध खोए रखते हैं।

नशों की लालसा के अतिरिक्त खान-पान की चाट वा गुलामी भी बहुत बड़े वर्ग को खा रही है। मासूम जानों को असमय मौत के घाट उतार रही है, बेज़ुबान पशुओं के खून से नाले भर जाते हैं, इस चाट का आकर्षण इतना जोरदार है कि करोड़ों अरबों को इसके ईलावा अपना भला सोचने की फुर्सत ही नहीं है। स्वादिष्ट भोजन स्थानों पर जाना स्टेटस सिंबल समझा जाता है या उच्च सोसाईटी में जाना और तरह तरह के स्वादिष्ट भोजनों का सेवन अमीरी का चिन्ह समझा जाता है।

तीसरी शारीरिक सुख की चाट में लिंग तृष्णा या काम वासना आती है। जो लगभग सारी ही मानवता को बचपन से लेकर बुढापे तक भयानक आग की तरह चिमटी हुई है। इसका आकर्षण इतना जोरदार है, इसके आगे राज गद्दी, रुतबा मर्तबा इज्जत, मान, सेहत और परिवार सब हेच दिखने लगते हैं। इस ओर बच्चे, जवान, बूढ़े बेतहाशा दौड़ रहे हैं और जल रहे हैं। अपने माता पिता की बच्चे, अपनी पत्नियों के पति, और हितकारियों की कोई फरयाद इस दौड़ में किसी को सुनाई नहीं देती। सुख वासना के सिलाब में नकारखाने में तूती की आवाज कौन सुने? यह कोई नहीं सोचता कि यह नीच सुखों की दौड़ मानव को कहां पहुंचाएगी। फिल्में, टी.वी., मोबाईल कम्पयूटर इसके ऊपर घी डालने का काम कर जाते हैं। सुखों की मस्ती सोचने ही नहीं देती कि क्या बनेगा इस संसार का जहां नेकी, पवित्रता, शर्म, हय्या की सदियों से बनी हुई बहुमूल्य कीमते भी पूरी तरह तबाह हो गई हैं।

अपनी हस्ती और उसकी हानि लाभ का ख्याल ऐसी सूरत में कैसे मुमकिन है। जहां सम्बन्धों की, परिवारों की, मासूम बच्चियों की किसी को सुध नहीं, चाहे इन सम्बन्धों के टुकड़े हो जाएं, इन वासनाओं को तरस नहीं आ सकता। इज्ज़त, पवित्रता, वफा, भरोसा सब अर्थहीन होते दिखाई देते हैं।

भयानकता और बर्बादी के उक्त बाढ़ से जो शरीफ जन होते हैं, वह सौभाग्य से बच जाते हैं, उन शरीफों के बड़े वर्ग को एक और भयानक आग लगी हुई है, जो नर्क की आग की तरह बुझती नहीं, बल्कि दोगुणी बढ़ती जाती है। यह शरीफ जनों की आग है, धन, जायदाद की प्राप्ति के अथाह ईश्क की बाढ़। धन मनुष्य की मुख्य ज़रूरतों में से अवश्यक ज़रूरत है, परन्तु यह आपकी अवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है। यह मनुष्य की मुख्य ज़रूरत नहीं। परन्तु इसका इश्क भले जनों को इसे मुख्य, ज़रूरी, सदा अतृप्त रहने वाली ज़रूरत बना देता है। यह करोड़ों अरबों की मुख्य अवश्यकता बनकर, सेहित शिक्षा, भलाई, परिवारिक मेल आदि तक का कोई मुल्य तक नहीं रहने देती। धन, धरती का इश्क शरीफों का कोढ़ है। जो जन काले बालों अर्थात जवानी की अवस्था में गौण को सैंकडरी नहीं बना सकते, फिर सुफेद बाल होने तक गौण बनाना असम्भव सा ही हो जाता है। धन लालसा के पुर बाज़ार के भीतर, इस सोच का पैदा

होना और स्थाई होना कि मेरा जीवन क्या है? मेरी मुख्य हस्ती क्या है? मेरी असल वा सार वस्तु क्या है? मेरा हानि हित क्या है? मेरा विकास, विनाश क्या है? यह असम्भव हो जाता है। सदा सदा धन कमाते रहकर, इससे कभी भी रिटायर न होकर अपने जीवन की सच्ची सुधि प्राप्त करना असम्भव है। दो किश्तियों में पैर रखकर कोई मुकाम नहीं मिल सकता।

मिथ्या विश्वासों का अलग भयानक ताना बाना है। जो मनुष्य के बड़े वर्ग को अपने धुप अन्धेरे के जाल में फंसाकर धोबी के कपड़े की तरह पटका पटका कर बुरी तरह नाश कर रहा है। नीच सुख अनुरागों के और भी फदे हैं। जो चूहों के पिंजरे की तरह मनुष्य को अपने में फंसाऐ बैठे हैं। उन सबका यहां ब्यान करना ज़रूरी है।

परन्तु एक और सबसे बड़ा महा रोग है, जिसका वर्णन करना अति ज़रूरी है, जिसमें सारी मानवता हर देश के सब लोग, बहुत बुरी तरह फंसे हुए हैं और फंसे रहने के लिए बेबस हैं। उक्त नीच सुखों की गुलामी किसी सीमा तक अक्ल से दिखाई दे जाती है। परन्तु इस महारोग को जिसमें मानवता का बच्चा बच्चा बुरी तरह फंसा हुआ है अक्ल समझ से भी देखा नहीं जा सकता।

परम पू० भगवान देवात्मा का सेवक बनकर, उनकी शिक्षा का शिक्षार्थी बनकर, विकासार्थी बनकर, हां उनके अद्वितीय कारज का कर्मचारी बनकर, पूर्ण जीवन समर्पणकारी बनकर, बहुत कुछ स्वादों का त्याग करके, जल्दी जल्दी इस महा रोग को देखना अधिकतर मनुष्यों के लिए असम्भव ही रहता है। वह उसकी महा हानियों के शिकार हुए बिना नहीं रह सकते। यह महारोग है अहं प्रेम, मैं का प्यार, अपने संस्कार, अपने मत, अपने स्वभाव, अपनी रूचि, अपनी वासना, अपनी इच्छा, अपने विचारों आदि का प्यार। ऐटम के रसायणक बम्बों की तरह जो महा भयानक, विनाशकारी और मृत्यु दायक हैं, यह महा रोग उससे भी भयानक, सूक्ष्म और अदृष्य है और मानव पहुंच से परे है। संसारिक और अध्यात्मिक, दीन और दुनियां की उपलब्धियों और प्राप्तियों के साथ जहां यह और बढ़ता जाता है, वहां यह और सूक्ष्म, अदृष्य और मनुष्य की समझ से दूर होता जाता है।

इस सम्बन्ध में गुरू महाराज ने फरमाया है "सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि कितने ही जन जो मेरी समाज में कर्मचारी कहलाते हैं वह अपने भिन्न विनाशकारी भावों और उनकी गतियों के विषय में कोई बोध नहीं रखते और उनसे मुक्त होने की कोई इच्छा अनुभव नहीं करते।"

एक पुरानी गुरू महाराज के समय की कर्मचारिणी साहिबा (जिनके दर्शन मैंने किए हैं) उनको लम्बे समय से गुरू महाराज के चरणों में रहने का नायाब अवसर मिला रहा। गुरु के कारज में मरते दम तक दुनियावी सुख स्वाद छोड़कर सेवाकारी हुई। वह भी अपने भावों के विचार से इस अवस्था में पहुंच जाती रही कि अपने विरूद्ध गुरू महाराज से सुनना भी गवारा नहीं करती थी। अपने विरूद्ध सुनकर (1) वह चोट खाती (2) गुरू के प्रति घृणा करने लगती (3) उनके रूप की पूजा का साधन छोड़ देती (4) हृदय तक देव प्रभावों का मार्ग बन्द हो जाता (5) अपने राक्षसी भाव से दुष्चिन्ता करने लगती (6) गुरू महाराज के दर्शन करने की इच्छा न रहती (7) किसी के अपने प्रति कुछ पूछने पर झूठ मूठ जबाब देने के लिए तैय्यार हो जाती, उच्च श्रेणी की कर्मचारिणी होकर भी कभी अपने हृदय तक देव प्रभाव पहुंचने का कोई सही और स्थाई मार्ग नहीं बना सकती थी। कभी देव रूप के प्रकृत दर्शन नहीं कर सकती थी। कभी अपनी नीचता को प्रकृत रूप में नहीं देख सकती

थी, उस नीचता से मुक्त होना तो हज़ारों कोसों दूर था। ऐसी हालत रखकर देव समाज में आए या न आए कोई अन्तर न रहता। उनका जीवन पूर्ण रूप से निष्फल हो जाता। सन 1918 में लिखा हुआ एक पत्र जो आपने पू० भगवान की सेवा में उनकी ही रोशनी में लिखा था अपने भले के इच्छुक जनों के लिए बड़ा ही शिक्षादायक है, वह यह है:-

"मेरे परम और सर्व हित कर्ता परम पू० भगवान! आपकी देव ज्योति में देख रही हूं कि मैं आपके देवरूप के सम्बन्ध में बहुत अपराधी हूं। मैं भिन्न भिन्न समय पर अपनी एक वा दूसरी सुखकर और हानिकारक रुचि के विरूद्ध आपसे कुछ सुनकर और उससे चोट खाकर, आपके सम्बन्ध में बहुत घृणा अनुभव की है। और ऐसी नीच दशा में पहुंचकर केवल यही नहीं कि मैं आपके देवरूप के सम्बन्ध में अपने साधन करने ही छोड़ दिए, और अपने हृदय तक देव प्रभाव पहुंचने का मार्ग ही बन्द कर दिया है, बल्कि आपके प्रति उस राक्षसी भाव के साथ प्रेरित होकर आपके सम्बन्ध में दुष्चिन्ताएं करके अपने आपको बहुत मैला, काला और पतित बनाया है। ऐसी हालत में पहुंचकर स्वभाविक ही मैंने झूठ बोलकर उसे कुछ उल्ट-पुल्ट जबाब दे दिया है, जिसके साथ मैंने और भी हानि उठाई है। आज इस समय सुबह ही उठने के साथ आपकी देव ज्योति के अन्दर मेरी यह भयानक हालत सामने आई और मैंने देखा कि और लाखों मनुष्यों की तरह मैं भी सुख वासनाओं की दास रही हूं और इनके लिए ही जीती रही हूं। इसलिए जो क्रिया मुझे सुखकर बोध हुई है, चाहे वह कितनी ही हानिकारक हो, वह मैंने की है। जो जन उसमें कुछ भी विघ्नकारी हुआ है, या उस हालत से मुझे निकालने में कुछ भी यत्न किया है, उसके प्रति घृणा से भर गई हूं। कितनी मेरी दुर्दशा! इस समय आपके सम्बन्ध में और कई घटनाओं को छोड़कर एक घटना बड़े जोर से मेरे सामने आ रही है, वह यह कि आज से कोई तीन साल पहले मैं जब बिमार होकर लहौर आई, तब आप जी को मिलने पर आपने कहा कि, "तुम खाने पीने में परहेज़ नहीं रखती, स्वाद वासना में फंसकर स्वास्थ्य नाशक वस्तुएं खा लेती हो, कि जो ठीक नहीं। आपका यह कहना बेशक सत्य था, परन्तु आपके इस कथन से अपनी मान बड़ाई की वासना पर चोट खाकर आपके प्रति घृणा भाव से भर गई। और इस नीच भाव से प्रेरित होकर मैं अपके प्रति दुष्चिन्ताएं करने लग गई, इस हालत में मैं जितने दिन वहां रही, कई दिन आपका दर्शन करना न चाहा। दूर से ही रस्मी प्रणाम कर लिया। इस दशा में अपने आत्मा के नाश के अतिरिक्त दूसरों पर भी बुरे असर पाए। आज आपकी ज्योति के अन्दर अपनी ऐसी महा अधम अवस्था को देखकर बहुत दुखी हुई। हाय! उपरोक्त नीच वासना की गुलामी के कारण मैं आप जैसे अपने अद्वितीय हितकर्ता को घृणा करके, जो इस प्रकार घृणा करने और सताए जाने पर भी अपने घृणा करने वालों वा सताए जाने वालों का सदा हित चाहते हैं, मैं अपने आत्मा को बहुत नीच और पतित बनाया है। अपने सार अस्तित्व की बहुत बड़ी हानि की है।

ऐसा हो कि मैं अब आपकी ऐसी ज्योति का निरादर न करूं, जो मेरी नीच पतित और विकृत आत्मा की अवस्था को दिखाती है और उसे प्राप्त करने के योग्य होकर अपने विकारों से उद्धार पाने के लिए आपके देव तेज को पाकर अपना कल्याण साध न कर सकूं।

बलदेव सिंह

एक चिराग और बुझ गया

(श्रीमान मुन्शी राम जी लोहे वाले)

भारत के ही नहीं, मानवता के बड़े सौभाग्य कि विकास क्रम में भारत के अद्वितीय लाल परम पू० भगवान देवात्मा ने अपने निराले, सत्य और शुभ के महा अनुरागों को लेकर अपने अद्भुत ज्योति और तेज भरपूर देव प्रभावों के द्वारा मानव इतिहास में जो अनोखा, घोर पापी, अन्ध विश्वासी और हानिकारक हृदयों को बदल कर नेक, उच्च और स्वर्गिय, सेवाकारी जीव बनाने का कार्य जारी किया है, बेशक वह घने जंगल में एक फूल खिले की तरह दुनियां तो क्या भारत में अभी अज्ञात और पूरी तरह छुपा हुआ है, उसी निराले क़िश्मों भरे कार्य के क्रम में पंजाब प्रान्त के, मोगे शहर का एक सौभाग्यवान हृदय सुन्दरता से रोशन हुआ था। बहुत शोक! पिछले महीनों में वह नेक ज़िन्दगी का सुन्दर चिराग बुझ गया। नेचर का नियम है कि जो फूल बहार दिखाकर पतझड़ के मौसम में पीले पड़कर आख़िर सूखकर झड़ जाते हैं, इसी प्रकार नेचर में मानव अस्तित्वों पर बहार आती है और अपनी अच्छी बुरी बहार देकर लोप हो जाती है। इस नियम को नेचर में कोई रोक नहीं सकता। हमारी हस्तियां भी इसी कतार में लगी हुई आगे खिसक रही हैं।

सन्मान के योग्य श्रीमान मुन्शी राम जी मोगा, एक नेक सूद परिवार से सम्बन्धित थे। वह अपनी शारीरिक बनावट में बहुत सुन्दर व्यक्तित्व के मालिक थे। बचपन वा जवानी में उन्हें कुश्ती का शौक था। इस कारण व्यायाम द्वारा उन्होंने अपने शरीर को बहुत सुडौल बनाया हुआ था। जवान होकर उन्होंने मोगे के मेन बाज़ार में लोहे की वस्तुओं का कारोबार सम्भाला हुआ था।

जितना मेरे पर असर है कि श्रीमान मदन लाल जी बजाज, श्रीमान मुन्शी राम जी और फिर श्रीमान टोपण दास जी (जिनका फलों का कारोबार था।) सब एक दूसरे के निकट ही कारोबार करते थे। इन सब पर सच्चे तपस्वी श्रीमान मनोहर लाल जी फिर देव समाज के ऋषि श्रीमान राम सिंह जी का बड़ा प्रभाव था, जो यह पू० भगवान देवात्मा की निराली समाज के साथ जुड़े रहकर इन्होंने फिर सारी उमर अच्छे और होनहार सेवक होने का मान रखा।

वह इस पक्ष में भी बहुत खुशकिस्मत थे कि उन्हें अपने अच्छी विरासत में श्रद्धा के भाव की बहुत सुन्दर पूंजी मिली थी, जिस कारण उन्होंने उस समय की कीमती संगत से, विशेषकर विकासालय की सभाओं से लगातार लाभ उठाया। वह न केवल मोटे मिथ्या विश्वासों, बल्कि मोटे पापों, मीट, शराब आदि से बहुत अच्छी तरह बच गए और भी उनके भीतर सुन्दर परिवर्तन आया। वह सदा सभाओं में आते और लाभ उठाते। गुरू महाराज की पुस्तकों को भी बहुत ध्यान से पढ़ते। समाज की पत्रिकाओं को विशेषकर धर्म जीवन को बहुत चाव से पढ़ते, यदि कोई अंक न मिलता, तो फोन करके मंगवाते और अधिकारी आत्माओं के नाम भी पत्रिकाएं लगवाते। अपने सपुत्र सुनीत जी जो दिल्ली थे, उनके नाम स्वंय पत्रिका लगवाई। जो पत्रिका उन्हें अधिक पसंद आती, उसकी पांच, छः कापीयां मंगवाकर अधिकारी आत्माओं तक पहुंचाते। पिछले साल धर्म जीवन में "दिल करता है" नामक

लेख छपा, उसे पढ़कर 90 वर्ष की उमर में वह गद्‌गद् हो गए। उसे तीन चार बार पढ़ा फिर मुझे फोन किया, उनका हृदय श्रद्धा से भरा हुआ था और प्रशंसा से भरकर वह जिस प्रकार बार बार धन्यवाद की पुकार मचा रहे थे, उस सब का ब्यान नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि मैं सारी ज़िन्दगी ऐसा लेख नहीं पढ़ा। कुछ दिनों के बाद फिर उन्होंने ऐसा ही फोन किया। फिर प्रशंसा वा धन्यवाद की झड़ी लगा दी, फिर बिनती की कि उन्हें 5-6 और कापियां भेज दूं। फिर यह भी प्रार्थना की कि किसी समाज में कोई जन हो, बच्चे बच्चे को इसकी कापी भेजने की कृपा करें। फिर मिलने पर बताया कि मैं लेख को बार-बार पढ़ता रहता हूं। उनके देहान्त के 2-3 दिन पहले मैं दीपक जी सन्धू के साथ ढूंडता हुआ उनके घर पहुंचा। वहां पहुंचने पर दीपक के सामने बहुत खुश हुए और वह मेरे पैरों पर गिर गए और कुछ देर में मुश्किल से उठाया। उन्होंने फिर फरमाया कि मैं वह लेख अब भी बार बार पढ़ता हूं और धन्य धन्य होता हूं। यह सब उनके सुन्दर हृदय की सुन्दर झलक दिखलाती है। जो कुछ उन्होंने महसूस किया, मैं इतना अवश्य कहूंगा कि मैंने अपनी ज़िदगी में किसी भी पाठक को किसी भी लेख की इस प्रकार बेबाक और बेबस होकर प्रशंसा करते नहीं देखा। मैं उनकी भावना को प्रणाम करके अपना भला कर लेता हूं।

श्रद्धा भावना उच्च दृष्यों की मां होती है। उस भावना से अति सुन्दर, सम्मान, सत्कार, सेवा और त्याग के सुन्दर दृष्य स्त्रोत से पानी की तरह बहते हैं।

पिछले लगभग 30 वर्ष से मैं मोगे आता जाता मेन बाज़ार में उनसे कुछ देर के लिए ज़रूर मिलता। वह अकसर मुझे देखकर दुकान से दौड़ कर बाहर आ जाते थे। और इधर उधर न देखकर भरे बाज़ार में मेरे पैरों पर गिरकर प्रणाम करने का यत्न करते थे। मुझसे कई साल बड़े थे। मैं जब उनको इस प्रकार प्रणाम न करने को कहता तो वह हाथ जोड़कर कहते कि मेरा तो दिल उस व्यक्ति के आगे इसी प्रकार झुकता है, जो गुरू महाराज का कारज करते हैं।

मोगा जिस समय सूद बिरादरी का गढ़ होता था और वह बिरादरी मोगे की अमीर महान बरादरी मानी जाती थी। सूद ही वहां पर ज़्यादा जायदादों के मालिक थे। इस बिरादरी का बहुत सत्कार था। सन्मान के योग्य मुन्शी राम जी, सूद बिरादरी के अति सुन्दर नौजवान थे। उनकी दुकान बहुत प्रसिद्ध थी। जितने ग्राहक उनकी दुकान पर आते थे शायद ही किसी और दुकान पर जाते हों। इसलिए उनका बहुत सन्मान वा प्रतिष्ठा थी। परन्तु उनकी श्रद्धा भावना ने एक ऐसा दृष्य प्रगट किया, जैसा बहुत कम दिखाई देता है। उनके उपकारी और समाज के ऋषि कर्मचारी श्रीमान राम सिंह जी, जो सारा दिन डब्बा दान मांगते थे, वह लोगों को सत्संग के लिए प्रेरणा करते थे। पाप छुड़ाते और देव समाज की पुस्तकें पढ़ने को देते। श्रीमान मुन्शी राम जी की श्रद्धा की मुबारक आंख ने उन्हें बड़े ही सुन्दर और तपस्वी रूप में देखा और उनके लिए ऐसा सम्मान वा सत्कार महसूस किया जो शायद ही उनका श्रद्धावान वा प्रशंसक दे सका हो। ऋषि राम सिंह जी कोई बहुत पढ़े लिखे जन नहीं थे, कोई लच्छेदार तकरीर या वाकविलास करने वाले नहीं थे। परन्तु जैसे कहा गया है, "उच्च जीवन के उच्च ही फल हैं" उनका अपना आप न्यौछावर करके सेवाकारी जीवन प्रचार करता था। श्रीमान राम सिंह जी एक अनपढ़, अनघड़ गांव के रहने वाले थे, जिनकी साधना ने सूद परिवार से सम्बन्धित अमीरज़ादे श्रीमान मुन्शी राम जी को इतना आकर्षित कर दिया कि उन्होंने प्रार्थनाएं कर उन्हें

अपने घर बुलाया, घर में उन्हें सुन्दर आसन पर बिठाया, अपने सौभाग्यशाली हाथों से आप उसे ऋषि जी के सुफेद दाढ़ी वाले मुख को धोया, अपने कर कमलों से उनके पैर धोए, खुद बनाकर या बनवाकर उनको स्वादिष्ट भोजन कराया, फिर उनके चरणों में सिर रखकर धन्यवाद से भरकर प्रणाम करके दोनों पति पत्नि ने तृप्ति पाई। उन्हें दान भी देकर सम्मानित किया। यदि यह कहा जाए कि श्रीमान जी के जीवन की यह सबसे सुन्दर उच्च घटना है। तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी।

उच्च जीवन की झलक अपने आप प्रचार करती है। नेक हृदयों को प्रभावित किए बिना नहीं रहती। श्रीमान मुन्शी राम जी का जीवन ज्यों ज्यों ऊंचा उठता गया उनके व्यवहार में बोलचाल में, बहुत बड़ा अन्तर आता गया। उनके निकटी सम्बन्ध मीठे और खुशनुमा होते गए। उनके एक निकटी रिश्तेदार को उनके जीवन ने इतना प्रभावित किया कि पहले वह महान हस्ती परम पू० भगवान के घोर विराधी थे, घृणा करते थे, वह सेवक बनने के लिए मज़बूर हो गए।

श्रीमान मुन्शी राम जी की पहले शादी हुई थी। वह उस समय कांग्रेस की प्रसिद्ध हस्ती श्री शादी राम जी की पुत्री थी। शादी राम जी लाला लाजपतराय के बराबर का रुतबा रखते थे। उन्होंने एक बेटी मोहन को जन्म दिया, परन्तु जल्दी ही विछोह दे गई और संसार से कूच कर गई। लाला शादी राम जी बहुत प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी रहे हैं, उन्होंने अंग्रेजों के अत्याचार सहे और कई बार जेल में रहे, इसी कारण उनकी आंखों की रोशनी चली गई और कोढ़ जैसा रोग लग गया। फिर वह स्वस्थ्य हो गए। आंखों के जाने से वह पराधीन हो गए।

वह पक्के अन्दोलनकारी कट्टर कांग्रेसी होने के साथ साथ आर्या समाजी भी रहे थे। आर्य समाज की ओर से परम पू० भगवान देवात्मा को न पहचान कर पू० भगवान का वा उनके अद्वितीय कारज का डट कर घोर विरोध, घोर निरादर वा उत्पीड़न हुआ था। श्री शादीलाल जी भी इसी समय आर्य समाज में सरगर्म रहे और बड़े ज़ोर से गुरू महाराज वा देव समाज की विरोधता की।

अपने दामाद श्रीमान मुन्शी राम जी के जीवन परिवर्तन का माननिय लाला शादी राम जी पर ज़ोरदार प्रभाव पड़ा। वह देव समाज विकासालय में आकर अपने एक कांग्रेसी फोटो फ्रेम बनाने वाले की सहायता से सभाओं में आकर शामिल होने लग गए। उनकी गहरी लगन को देखकर कई दफा देव समाजी जन भी उन्हें सभाओं में लाने और वापिस ले जाने में खुशी प्राप्त करते। मुझ नाचीज़ को भी उन्हें लाने घर छोड़ने का सौभाग्य मिला। उनके घर बैठकर देव शास्त्र तीसरे खण्ड का पाठ करके सुनाता रहा हूं। एक बार मैं उन्हें छोड़ने जा रहा था, तो रास्ते में अपने अनुमान के अनुसार खड़े होकर कहा कि अपनी बाईं तरफ देखो, एक बन्द ईमारत होगी। मेरे हां करने पर उन्होंने कहा कि यह आर्या समाज का मन्दिर है, वहां अपनी गतिविधियों का भी उन्होंने ब्यान किया। वह 8 - 10 वर्ष तक लगातार सभाओं में शामिल होते रहे और पाक खुशी से भरकर श्रद्धा से भरकर देव समाज के 1964 - 65 में सेवक बनें। वह उच्च दृष्य मैंने अपनी आंखों से देखा है। उनकी पाक खुशी भरा भाव प्रकाश उस समय के सत्य देव सम्वाद में छपा हुआ है। राजनैतिक क्षेत्र में इतनी प्रसिद्ध हस्ती का देवात्मा के प्रति श्रद्धावान होना और चावभाव से उनका सेवक बनना एक बड़ा ही अकर्षणिय दृष्य था। इस सब का श्रेय श्रीमान मुन्शी राम जी के परिवर्तन को जाता है।

श्रीमान मुन्शी राम जी का श्राद्ध का साधन देव समाज विधि के अनुसार हुआ। कांग्रेस के कई बड़े लीडर आकर बोले। हिन्दी उर्दू अख़बारों में उनके प्रति कई दिन श्रद्धांजली छपती रही। भगवान देवात्मा की ज्योति शक्ति का जादू सिर चढ़कर बोलता है।

श्रीमान मुन्शीराम जी मुक्त कंठ से गुरू महाराज के कारज की महिमा सदा गाते रहते थे। कई जनों को संगत में आने के लिए प्रेरत करते रहते थे। अधिकारी जनो के नाम देव समाज की पत्रिकाएं लगवाते रहते थे। कईयों को स्वंय भेजकर सन्तुष्ट होते। श्रीमान मुन्शी राम जी पैसे पैसे से डब्बा दान देते हुए और दान करने लग गए थे, कई औरो को भी इसमें भागीदार बनाने के लिए तैय्यार करते। वैसे तो वह सैंकड़ों रू० दान करके खुश होते। मुझे अकसर फोन करके कहते कि श्रीमान जी 500 या 1000 या ज़्यादा दान देना है, किसी को भेजकर मंगवा लो। दान देकर वह बहुत खुशी अनुभव करते। आख़िर समय तक पत्रिकाओं वा किताबों का पाठ करते रहे।

वह विकासालय की संगत के लिए हमेशा आकर्षण रखते। अकसर सुबह सुबह विकासालय आकर, पौधों आदि की सफाई करके तृप्त होते थे। ज़िन्दगी में कई बार उन्होंने विकासालय में डेरा लगा लिया। सुबह की सभा सुनकर वह दुकान पर चले जाते, फिर शाम को आ जाते। कई बार लम्बी संगत में रहकर वह अपना भला करने का यत्न करते।

देव समाज की नादर संगत में वर्षों लाभ उठाकर उन्होंने कई नियम बना लिए थे, वह स्पष्ट वक्ता थे। वह ईमानदार थे। लाग लपेट से परे थे। अच्छी क्वालटी की वस्तुएं रखते थे और उनका सच्चा भरोसा दिलाते थे। वह अकसर उधार देने में विश्वास नहीं रखते थे। उक्त कारणों से उनकी प्रतिष्ठा बढ़ गई थी। दुकान अकसर ग्राहकों से भरी रहती थी।

शुरु जवानी में वह पहलवानी का शौक रखते थे, परन्तु समाज में आकर वह सेहत सम्बन्धी बोधी हो गए थे, सयंम, परहेज़गारी, सैर व्यायाम का ख़्याल रखते। इसीलिए 90 वर्ष की उमर तक वह पूरी तरह चलते फिरते थे। एक दिन भी चारपाई पर नहीं पडे, चलते फिरते ही संसार से विदा हो गए। बहुत शोक है कि एक होनहार साथी सेवक, जिनका पहले ही अकाल पड़ा हुआ है, के जीवन का चिराग बुझ गया।

बलदेव सिंह

श्री अकबरपुर की पवित्र यात्रा

जो सेवक सेविका श्री अकबरपुर यात्रा में जाने के इच्छुक हों वह 16 अक्तूबर 2014 को ऊंचाहार ऐक्सप्रैस में रूरा (Roora) तक अपनी सीटें चण्डीगढ़, अम्बाला कैंट या दिल्ली से जल्दी बुक कराने की कृपा करें। सत्संग 17 अक्तूबर सुबह से 19 दुपहिर तक चलेगा। वापसी की booking कानपुर से कराई जाए।

हमारे बच्चों का भविष्य

कहने को हम कहते हैं कि बच्चे ही हमारा भविष्य हैं, परन्तु बच्चों का भविष्य किस ओर जा रहा है, इस ओर बहुत कम अभिभावक ध्यान दे रहे हैं।

(1) सर्व प्रथम आज के युग में माता पिता के पास बच्चों को देने के लिए समय नहीं, जो बच्चों की सबसे बड़ी अवश्यकता है। जो गरीब, हैं, अनपढ़ हैं, उन्हें रोटी रोज़ी कमाने से फुर्सत नहीं, महंगाई के कारण और भी लोग व्यस्त हो गए हैं, जो अधिक पैसे वाले हैं, उनको सन्तोष नहीं वह यह सोचते हैं कि हम बच्चों को जितनी सुख सुविधाएं देंगे, उतना ही हम बच्चों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर रहे हैं, छोटे छोटे बच्चों को वीडियो गेमज़, मोबाईल दे देते हैं, या बच्चे कार्टून देखकर समय बताते हैं, कार्टूनों में भी इतनी क्रूरता दिखाई जाती है, चीर फाड़, मार धाड़ और उसे देखकर बच्चों में हिंसक प्रवृति बढ़ रही है। हमदर्दी, सद भावना घटती है, बन्दूकें चलाना, पिस्टल चलाना खिलौनों में बच्चों की प्रिय खेल बन चुकी है। उसके परिणाम हमारे सामने आज युद्धों के रूप में, आंतकवाद के रूप में, आगजनी के रूप में, तोड़ फोड़ के रूप में, कतलोगारत के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं। "टाम ऐंड जैरी" "कैस्पट एंड घोसट" जो बच्चों को प्रिय होते हैं, उनमें कितनी हिंसा होती है और हिंसक ऐकशन देखकर बच्चे खूब तालियां बजाते हैं, तो इन भविष्य के निर्माताओं में सहानूभूति कैसे पैदा होगी?

(2) बच्चों को क्रैच में छोड़ना पड़ता है, जो उमर उनकी दादा, दादी के साए में पलने की होती है, वह अपने घर के वातावरण से दूर वह अकेले पड़ जाते हैं, कई कई तो क्रैच वाले बच्चों को सोने की दवाईयां दूध में पिला देते हैं, ताकि वह सोए रहें और उन्हें तंग न करें। छोटे छोटे बच्चों में अकेलापन और तनाव बढ़ जाता है। थोड़ा सा और बड़े होने पर वह अपना अधिक समय कम्पूयटर पर बिताने लगते हैं, इससे माता पिता के साथ बच्चों की दूरियां बढ़ती जाती है, वह हताशाओं से घिर जाते हैं और कई प्रकार के नशों के शिकार हो जाते हैं। वह अपनी जिज्ञासाओं और स्वप्नों को किसके साथ बांटें? इसलिए चाहे आमदनी कम में गुज़ारा करना पड़े, पर बच्चों के साथ समय बिताना माता पिता के लिए बहुत अवश्यक है। माता पिता का ममता भरा स्पर्श बच्चों के भीतर अच्छे गुणों को विकसित करता है। यह बच्चों का अधिकार भी है। यह प्यार एक अन्मोल तोहफा है। भौतिक साधन बच्चों के भीतर उन गुणों को उत्पन्न नहीं कर सकते जो बच्चों को गुणवता पूर्ण समय देकर माता पिता कर सकते हैं।

(3) आजकल एक और दुर्भाग्य पूर्ण माात पिता का खैया हो गया है कि स्कूल में बच्चे को सबसे अव्वल रहना चाहिए। वह एक प्रतिष्टा का विषय बन जाता है, यदि पड़ोसी के बच्चे के नम्बर ज़्यादा आ गए तो माता पिता comparison (मुकाबला) करने लगते हैं, जिससे बच्चों के भीतर हीन भावना आ जाती है। घर में भी दो बच्चों की योग्यता अलग अलग होती है, उनके बीच भी मुकाबला करना बहुत ग़ल्त है। एक बच्चा किसी चीज़ में अच्छा हो सकता है, दूसरा किसी और चीज़ में। हर माता पिता बच्चों के लिए ऊंचे सपने देखते हैं, देखने भी चाहिए, परन्तु अगर अपने सपने पूरे करने के लिए बच्चे की मान्सिक, हार्दिक ग्रोथ को ही ताक पर रख दें तो वह गल्त है। बच्चे के रूझान को देखकर ही उससे आशा करनी चाहिए।

(4) आजकल के बच्चों के सामने एक और

चुनौती खड़ी हो गई है। टी.वी. के प्रोग्रामों में भागीदार बनने की। माता पिता में होड़ लगी हुइ है कि उनके बच्चों को टी.वी. पर आने का मौका मिल जाए, चाहे वह गाने की प्रतियोगिता हो, चाहे डांस वा कोई कला दिखाने की। 3 साल से लेकर 12 साल तक के बच्चे इसमें भाग ले रहे हैं। पहले तो उनकी तैय्यारी करवाने में दिनों नहीं महीने लगते हैं, उनकी जो खेलने कूदने की उमर हैं, उसमें माता पिता ज़बरदस्ती उनको प्रतियोगिता की तैय्यारी में लगा देते हैं, वहां वह कितना थकते हैं, कोई सोने का समय नहीं, खेलने का समय नहीं, पढ़ने का समय नहीं। फिर जब स्टेज़ पर आते हैं और परर्फाम करते हैं, तो खूब तालियां बजाकर उन्हें उत्साहित किया जाता है परन्तु जब उन्हें प्रतियोगिताओं से निकाला जाता है, तो हताशा, निराशा, रोना देखा नहीं जाता, वह छोटी सी उमर में मायूसी का शिकार हो जाते हैं। फिर उस रंगीन दुनिया से अलग होकर भी उन स्वप्नों में खोए रहते है, उनका असली व्यक्तित्व कहीं खो जाता है।

इससे भी आगे, उनके गाने और डान्स इतने गन्दे गानों पर होते हैं, जो व्यस्कों के लिए भी शर्मनाक होते हैं, गन्दे ऐकशन उन्हें सिखाए जाते हैं, उन पर जज भी खूब तालियां बजाते हैं, वह नन्हें मासूम समय से पहले ही परिपक्व हो जाते हैं। वह मासूम माता पिता की महत्वाकांक्षाओं की और टी.वी. वालों की किसी भी प्रकार पैसा कमाने की हवस के शिकार हो जाते हैं।

उनकी सुरक्षा भी प्रश्न है। सिखाने वाले कैसा चरित्र रखते हैं, कैसी हरकतें करते हैं, माता पिता यह जानना ही नहीं चाहते। यह हमारी बदकिस्मती हैं कि हम अपने बच्चों के भविष्य को अन्धकार-मय बना रहे हैं। उनकी शिक्षा अधूरी रह रही है।

माता पिता बनने से पहले अवश्य ऐसे ट्रेनिंग सैंटर होने चाहिए, जो माता पिता की रहनुमाई कर सकें, उनके मनोविज्ञान को समझें, तभी हमारा भविष्य सुरक्षित हो सकता है।

सुरजीत बराड़

त्याग ब्रत

परम पू० भगवान दोवत्मा ने अपनी धर्म समाज में सितम्बर का महीना त्याग ब्रत का महीना रखा है। गुरू महाराज, उस व्यक्ति को जिसमें किसी और के लिए कुछ नहीं निकलता, जो कोई कभी किसी के काम नहीं आना चाहता, उसके प्रति गहरी घृणा रखते हैं। ऐसा जीवन उनके सामने मुर्दा लाश की तरह है। वह बहुत चाहते हैं और बेहद बेकरारी से चाहते हैं कि उनका कोई सेवक ऐसा न हो जो कुछ भी त्याग की बात न करे। इसलिए सब सेवकों को इस महीने कोई न कोई फालतू का वस्तर या और कोई अपने लिए अनावश्यक वस्तु को त्याग करके समाज को दान देना चाहिए। कम से कम इस महीने के भीतर त्याग का कोई साधन करके अपना अवश्य भला करना चाहिए।

गुरू महाराज ने फरमाया है:-

"जो मनुष्य जितना नीच होता है, उतना ही वह स्वार्थ से भरा हुआ होता है, इसलिए स्वार्थ से भरे नीच जनों के द्वारा किसी समाज या देश का कोई भला नहीं हो सकता, जो जन जितना स्वार्थ त्याग करता है, वह उतना ही उच्च बनता है, अपना और औरों का हित साधन करता है। हमारे सामाजिक जनों के भीतर भी स्वार्थ त्याग का जितना भाव बढ़ेगा, उतना ही उनका और समाज का भला होगा।

देवात्मा

अकेले आदमी की ताकत को समझिए

पहली कहानी: ओडिशा के भुवनेश्वर में निराकार मिल्लक लिफ्ट एरिगेशन कॉरपोरेशन में निराकार मल्लिक ठेके पर काम करते हैं। वे यहां मोटर पंप ड्राइवर हैं। लेकिन वे एक चीज से व्यथित थे। नजदीकी केंद्रपाड़ा जिले के अलियाहा गांव में लोग बाढ़ और तूफान जैसी प्राकृतिक विपदाओं से जूझ रहे हैं। अलियाहा निराकर का पैतृक गांव है। सिंचाई विभाग में काम करते हुए उनको सिखाया गया था कि ऐसी समस्याओं का स्थायी समाधान है पानी स्त्रोतों के इर्द-गिर्द पौधे लगाए जाएं। इससे मिट्टी का क्षरण रुकेगा। और पानी को बेकार बहने से रोका जा सकेगा।

निराकार दलित समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। यह 1992 की बात है। उस वक्त 52 साल के निराकार ने एक मिशन अपने हाथ में लिया। उन्होंने अलियाहा गांव की खाली पड़ी सरकारी जमीन पर पौधे रोपना शुरू कर दिया। जब उन्होंने यह काम शुरू किया तो कई लोगों को लगा कि उन्हें कोई सनक चढ़ी है। यह भी लगा कि शायद वे सरकारी जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं। हालांकि कुछ पढे-लिखे लोग उनकी मदद को भी आगे आए। ब्लॉक स्तर के स्थानीय अधिकारियों और वन विभाग के लोगों ने मदद की। निराकार को मुफ्त में पौधे उपलब्ध कराए।

इसी बीच 2001 में निराकार की नौकारी चली गई। सरकारी खर्चों में कटौती की मार उनकी नौकरी पर पड़ी। लेकिन तब तक वे पौधे जो उन्होंने अपने गांव की सरकारी जमीन पर रोपे थे, आधे पेड़ बन चुके थे। उन पेड़ों ने निराकार को फुर्सत से नहीं बैठने दिया। और आज उस पूरे इलाके में अच्छा-खासा जंगल तैयार हो चुका है। वो जमीन जो बंजर सी दिखती थी। जिस पर पहले लोग कचरा डालते थे, अब हरी-भरी है। पेड़ पूरी ऊंचाई पा चुके हैं। प्रशासन भी इस जंगल को बचाए रखने की अब पूरी कोशिश कर रहा है। क्योंकि यह मिट्टी का कटाव रोक रहा है।

दूसरी कहानी: रघु मकवाना तीन साल पहले वह एक भिखारिन से मिला था। उस महिला को तब कुछ दवाइयों की जरूरत थी। उसने उस महिला की मदद की थी। और अगले हफ्ते जब वह महिला उसको मिली तो उसे खूब दुआएं दीं। उसे गले से लगा लिया। उससे कहने लगी, 'तुम मेरे बेटे की तरह हो। तुमने मुसीबत में मेरी मदद की'। उसी दिन से रघु मकवाना ने तय कर लिया कि उस बूढ़ी मां को वह कभी भूखा नहीं रहने देगा। रघु ने उसे और उसके पति को शुरू-शुरू में गेहूं का आटा उपलब्ध कराना शुरू कर दिया। और फिर धीरे-धीरे खाना ही देने लगा। कुछ दिन बाद हालत यह हो गई कि जब भी रघु उन लोगों के पास नहीं आ पाता वे दोनों भूखे ही रह जाते। इसलिए रघु ने रोज का काम बना लिए कि वह अपने गोद लिया माता-पिता के पास जरूर जाएगा। रघु जिस जगह काम करता था वहां से भी उसे 10,000 रुपए की मदद मिली। इस बीच उसके गोद लिए हुए माता-पिता की तरह के कुछ और लोग उसकी ओर देखने लगे। मदद पाने के लिए। रघु ने भी किसी को निराश नहीं किया। धीरे-धीरे उन जरूरमंदों की संख्या बढ़ने लगी। इधर रघु को भी उसके इस काम में लोगों की मदद मिलने लगी।

हालांकि उसे यह पता नहीं होता था कि वह जरूरतमंदों के लिए अगले समय के भोजन का इंतजाम कैसे करेगा। लेकिन किसी न किसी तरह व्यवस्था हो जाती। और इसी तरह तीन साल से चल रहा यह सिलसिला अब तक बदस्तूर जारी है।

आसपास के 18 लोगों को रघु दो जून का भोजन दे रहा है। रघु की एज़ेंसी के मालिक जयेश पटेल ने उसे एक दोपहिया वाहन दिया है। ताकि वह जरूरतमंदों तक समय पर भोजन पहुंचा सके। रघु को आज पूरे गुजरात से मदद मिल रही है। कुछ लोग तो सप्ताह में एक दिन उपवास रखकर भी उसे मदद दे रहे हैं।

फंडा: कई लोग कहते हैं, 'मैं अकेला क्या कर सकता हूं?' तो उन्हें बताइए कि अकेले वे पहाड़ हिला सकते हैं। जंगल खड़ा कर सकते हैं। सैकड़ों लोगों का पेट भर सकते हैं। बस इरादा होना चाहिए। अकेले-दुकेले से कोई फर्क नहीं पड़ता।

दयामयी गौ-माता

हमारी गौशाला वैसे तो वृद्ध गायों से भरी रहती है, क्योंकि इसका उदेश्य ही है आर्थिक दृष्टि से अनुपयोगी (नाकार) गायों को जनता से प्राप्त कर उनकी रक्षा करना, परन्तु कभी कभी कोई सज्जन दूध देने वाली गाय भी दान में दे देते हैं। इसलिए ऐसी गायों से 3-4 लीटर दूध ही एक समय मिल पाता था।

एक दिन दूध बहुत कम आया। मैंने ग्वाले से पूछा-क्यों भाई, आज दूध बहुत कम है, वैसे ही खर्च बहुत हो रहा है, उसपर पूरी गौशाला का मात्र 3-4 लीटर दूध? उसने उत्तर दिया,- महाराज, गौशाला में एक गर्भवती सुअरनी ने आकर बच्चों को जन्म दिया है। सुअरनी के कमज़ोर तथा बीमार होने से कारण उसके बच्चों की भूख शांत नहीं हो पाती। वे आकर गाय का दूध पी जाते है, इसलिए दूध कम है।

मैंने पूछा, वे दूध कैसे पीते है? वह बोला-जब गौ-माता लेट जाती है, तब सुअरनी के बच्चे आकर उनके थनों में लिपट जाते है और थनों को अपने अपने मुँह में लेकर प्रेम से दूध पीते है। गाय उन्हें लात नहीं मारती? मैंने जिज्ञासा की।

उसने बताया-महाराज, गाय उन्हें मारती तो नहीं, उलटे बड़े प्रेम से चाटती तथा प्यार करती है। यह सुनकर मुझे बड़ी हैरानी हुई। ग्वाला बोला, मैं एक दिन आपको ले जाकर यह दृश्य अवश्य दिखाऊंगा।

कुछ दिनों बाद मैं अचानक गौशाला में गया, तबतक सुअरनी के बच्चे कुछ बड़े हो गए थे। मैंने अपनी आँखो से देखा-गौमाता शांत-मुद्रा में खड़ी एक सुअरनी के बड़े बच्चे को बड़े स्नेह से दूध पिला रही है, और सुअरनी का एक बच्चा अपने दो पैरों पर खड़ा होकर बड़े प्रेम से उसके अमृतमय दूध का मुक्त-भाव से पान कर रहा है। मुझे दृश्य बड़ा अद्भुत लगा तथा बड़ी प्रसन्नता हुई।

धन्य है गौमाता! जो अपने बच्चों तथा मनुष्यों को तो अपना अमृतमय दूध देती ही है, अन्य पशुओं के बच्चों को भी उसी प्रकार समान-भाव और प्यार से अपने दूध का पान कराकर समय पड़ने पर उनकी जीवन-रक्षा करती है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सच्चा शिष्य वही है जो हर छोटी-बड़ी, अच्छी-बुरी घटना से सबक लेकर आत्म-विकास की ओर अग्रसर हो सके। सबको समान दृष्टि से देखे। काश! हम सब पूजनीय भगवान् के देव-भावों का उचित प्रत्युत्तर (Response) दे सकें तथा अपना तथा औरों का सच्चा हितसाधन कर सकें।

प्रेषक: (चन्द्र गुप्त) साभार : कलयाण क्र:5 वर्ष 86

पाठकों के विचार

हमारे बड़े सौभाग्य हैं कि परम पू० भगवान के महान कार्य में पत्रिकाएं निकालकर कुछ कील कांटा बनने का सौभाग्य मिला हुआ है। इन पत्रिकाओं से जो जो धर्म सम्बन्धी विशेष रूप से लाभ उठाते हैं, वह समय समय पर अपने फोन द्वारा अपने हर्ष और लाभ का वर्णन करते रहते हैं। पिछले दिनों एक बज़ुरग सेवक महिला ने भी यह बताया कि कैसे वह एक एक लेख को बार बार पढ़ती है और भी धर्म सम्बन्धियों के इन भावों को जानकर हमें बहुत उत्साह मिलता है और परम पू० भगवान को बार बार धन्यवाद देने को दिल झुकता है कि उनकी ही कृपा से हमारी तुच्छ योग्यताएं कुछ निख़री हैं नहीं तो हमने कहां इस योग्य होना था।

चन्द्रगुप्त जी अपने भावों का इस प्रकार प्रकाश करते हैं।

माननिय श्रीमान जी, सत्य देव की जय।

मैं आपको अपनी शुभकामनाओं में हररोज़ याद करता रहता हूं। आपके पंजाबी और हिन्दी पत्रिकाओं में लेख बहुत सुन्दर और दिल को छू लेने वाले होते हैं। मैं बीच बीच में छोड़कर फिर दुबारा पढ़ता रहता हूं। आजकल "हित स्त्रोत" मार्च तथा अप्रैल 2014 का लेख पढ़ रहा हूं। आपके लेखों को पढ़कर लगता है कि दिल उस युग में फिर वापिस चला गया, जब पूजनीय भगवान और उनके असली शिष्य इस धरती पर विचरण करते थे और भगवान स्थूल रूप में चारों ओर अपने 'देव प्रभाव' फैला रहे हैं। क्या सचमुच वही दिन लौटकर वापिस नहीं आ सकते? उससे आगे लिखते हैं:

आपने धर्म जीवन में साथी सेवक मास्टर हंसराज जी के बारे में जो सूचना तथा लेख प्रकाशित किया है, वह जहां बहुत सुन्दर तथा दिलों को उभारने वाला है, वहीं आपके सुन्दर हृदय तथा साथी सेवकों के प्रति आपकी भावशीलता का भी सच्चा प्रभाव है। आपने बहुत ही सुन्दर तथा सिलसिलेवार ढंग से श्रीमान जी के सरल और सुन्दर जीवन के बारे में जानकारी प्रस्तुत की है, उसके लिए आपका हृदयगत भावों से धन्यवाद करता हूं। मैं अकसर यह महसूस करता हूं, कि परम पू० भगवान देवात्मा के श्री चरणों में आकर जीवन सफल करने की यह पहली शर्त है कि उनका अनुगत "सरल हृदयी" हो। मैं और मास्टर हंसराज जी साथ साथ भटिंडा में कई घरों में विजिट किया करते थे तथा मेरे दिल पर उनके सरल हृदय की तभी से छाप लगी हुई है। असली सेवक पहले ही बहुत कम रह गए हैं अब यह भी चले गए। बहुत अफसोस! परलोक में उनके मंगलमय जीवन के लिए शुभ कामना करता हूं।

एक बार पुनः आपका हादिर्क धन्यवाद।

कृतज्ञ

लो कमल पैसंजर ट्रेन से रोज़ सुबह महानगर को जाते समय एक सज्जन लगभग हर दिन मेरे आसपास बैठे मिलते थे। मेरी तरह अप-डाउन करने वाले वे सज्जन मुझे बड़े रहस्यमय प्रतीत होते थे। मितभाषी, हल्की सफ़ेद दाढ़ी-मूंछ और सूट-बूट धारी..... लगते कोई बड़े अधिकारी ही थे।

जब गाड़ी स्टेशन से छूटकर अगले सिग्नल पर किसी तकनीकी कारणवश धीमी हो जाती थी, तो वे हमेशा, बगैर चूके अपनी सीट से उठकर खड़े हो जाया करते थे और सामने के विशाल किंतु खाली पड़े भूखंड को देखकर कुछ बुदबुदाया करते थे।

ट्रेन की खिड़की में से, उस विशाल भूंखड पर सिवाय एक मंदिर और कुछ दूरी पर एक दरगाह के अलावा कुछ नहीं दिखता था। समझ से परे था कि वे सज्जन किसको नमन कर रहे हैं, मंदिर को या दरगाह को।

काफ़ी दिनों बाद जाकर जिज्ञासा शांत हुई, पर

जवाब चौंकाने वाला मिला, 'भैया, न तो मैं मंदिर को हाथ जोड़ता हूं न दरगाह को! मैं तो उस पवित्र भूमि को प्रणाम करता हूं, नमन करता हूं, जहां पहले एक विशल कपड़ा मिल थी और जिसमें मेरे पूज्य पिता जी मुलाज़िम थे। इसी ज़मीन की बदौलत आज मैं एक उच्च पद पर हूं। रोज़ गाड़ी जब यहां से गुज़रती है, तो मैं अपने स्वर्गीय पिता और उस 'स्वर्गीय' कपड़ा मिल को याद कर लेता हूं, बस!

एक मुसाफिर

गंभीर बीमार पिता की सेवा करता छात्र बना मिसाल

दुनिया में पिता का स्थान कोई ओर नहीं ले सकता। पिता जैसा न कोई है, न हो सकता है। चीन में ऐसी ही एक घटना मिसाल बन गई और इंटरनेट पर वायरल हो गई है। अन्हई प्रांत की लियूआं काउंटी में 20 साल का गुआ शिजुन कम आय वाले परिवार से है। उसके पिता को गंभीर बीमारी है। उनके हाथ-पैर काम नहीं करते हैं। पिता को अपने होस्टल में लाकर सेवा करने के लिए शिजुन ने यूनिवर्सिटी प्रशासन से इजाजत मांगी। पिता और पढ़ाई के प्रति लगाव देखकर यूनिवर्सिटी प्रशासन ने इजाजत दे दी। वह पिता की देखरेख के साथ-साथ पढ़ाई भी करता है। आज यूनिवर्सिटी में टॉप करने वाले छात्रों में उसका नाम है। अच्छे अंक लाने के कारण उसे स्कॉलरशिप भी दी गई, जिससे उसने पिता के लिए स्पेशल बेड बनवाया ताकि वे एक्सरसाइज कर सकें। वह उन्हें अपने मोबाइल फोन से प्रेरणादायक और सकारात्मक कहानियां सुनाता है शिजुन के दोस्त भी उसके पिता की देखरेख करने पहुंच जाते हैं। शिजुन के लिए यह पहला झटका नहीं है। बचपन में ही उसकी मां बीमारी के कारण मानसिक रोगी हो गई। बेहद गरीबी में पलकर वह बड़ा हुआ और पढ़ाई के बल पर उसे यूनिवर्सिटी में दाखिला मिला। इसके बावजूद वह सकारात्मक सोच रखता है। वह कहता है, मैं यह तो नहीं कहता कि जीवन आसान है। परेशानियों से जूझने का एक ही रास्ता है, कठिन परिश्रम। इसीलिए मुझे अपने जीवन से कोई शिकायत नहीं है।

भगवान देवात्मा फरमाते है: -

जैसे शरीर के जीवन की रक्षा के लिए अन्दर के मैल से शुद्धि पाने की बहुत अवश्यकता है, वैसे ही मनुष्य को अपने आत्मिक जीवन की रक्षा के लिए आन्तरिक मैल से शुद्धि प्राप्त करने की नितान्त अवश्यकता है। मनुष्यात्मा अपने भीतर के नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं के कारण मिथ्या और अशुभ की जो चिन्ताएं वा क्रियाएं करता रहता है उसके आत्मा में मैल वा विकार पैदा होते रहते हैं। यदि वह मैल वा विकार आत्मा के अन्दर इकट्ठे होते रहें, तो वह मनुष्य को न केवल सचाई और भलाई की हितकर गतियों से उदासीन कर देते हैं और बेसुध बना देते हैं, बल्कि उसके जीवन का नाश करते और उसके जीवन के लिए जान और प्राण की चीज़ देवात्मा के जो अमूल्य देव प्रभाव हैं, उनके लाभ करने के अयोग्य बना देते हैं और धीरे धीरे उसके सारे अस्तित्व का ख़ात्मा कर देते है। इसलिए जैसे प्रत्येक मनुष्य के शरीर से मैल के खारिज होने और उसे शुद्ध रखने की नितान्त अवश्यकता है, बिना आत्मिक मैल वा विकारों से शुद्धि लाभ पाने के किसी भी मनुष्य आत्मा की विनाश से रक्षा और विकास नहीं हो सकता। भगवान ने फरमाया तुम्हें हमेशा इस सचाई को स्मरण रखना चाहिए और उससे लाभ उठाना चाहिए।

अमरीका में शुभ संग्राम

श्रीमान बलदेव सिंह जी कैलीफोरनिया स्टेट में फ्रांसिसकों के निकट गए और कई परिवारों को मिले और हितकर बातचीत करने का अवसर मिला। वह 23 जून से 26 जून तक वहां रहे। वहां से वह मोगा निवासी श्रीमान मास्टर अवतार सिंह जी बराड़ और उनकी धर्म पत्नी भरपूर कौर जी की इच्छा अनुसार 26 जून को उनके पास पहुंचे। जाते ही श्रीमान जी ने वहां एकत्र 15-16 जनों को लेकर सभा की। सब सभा सुनकर बहुत खुश हुए। अगले दिन सभाओं का प्रोग्राम रखा गया। यहां पर 5 दिन सुबह शाम सभाएं करवाई गई। कुल 8-9 सभाएं हुई। श्रीमान अवतार सिंह जी, उनकी पत्नी के अतिरिक्त उनकी बेटी गगन और उनके पति डाक्टर सतिन्द्र सिंह जी, उनके साथी और 2 डाक्टर उनकी एक की धर्म पत्नी, बीबी गगन की बड़ी बहन जो फिज्योथरैपिस्ट है। श्रीमान नायब सिंह जी समराला की पुत्री जो Dental Doctor है, एक और परिवार के 5-6 जन (एक सभा में आए) एक और पड़ोसिन बीबी, और एक अवतार सिंह जी के बेटे की बहू आदि सभाओं में बहुत चाव भाव से शामिल होते रहे। अवतार सिंह जी के लगभग सारे परिवारिक जन सम्बन्धी, नशों और मांसाहार से बचे हुए हैं। सबने लगभग अपने अपने कामों से छुट्टियां ले ली। सभाओं और संगत के जोरदार प्रभाव, देवात्मा सत्गुरू के लासानी, अद्वितीय कारज, नीच अनुरागों द्वारा भयंकर तबाही, मनुष्य का सम्बन्धों में जीवन, शुक्रगुज़ारी, मनुष्य जीवन का सच्चा लक्ष्य, पर हित के भावों की अवश्यकता आदि विषयों पर सभाएं होती रही। लगभग सब सभाओं में ही बहुत अच्छा मण्डल बनता रहा और सब प्रभावित होते रहे। बाद में इन विषयों पर बातचीत भी होती रही एक जन बहुत देर तक श्रीमान जी से अपनी समस्याएं भी discuss करते रहे।

आख़िरी दिन भी सभा के बाद कई जनों ने अपने आप भाव प्रकाश करने शुरू किए। बीबी भरपूर तो सब सभाओं में बहुत धन्य धन्य होती रही। समाज के, डाक्टर इकबाल सिंह जी के, बार बार उपकार सामने लाती रही और बहुत गहराई से महसूस करके धन्यवाद देती रही और उपकारियों के भी उपकार बताती रही। संगत रखने का भी बार बार धन्यवाद किया। आगे से भी और plan करके संगत रखने की इच्छा प्रगट की। श्रीमान जी की सेवा का जितना फिकर और ध्यान किया, उसका पूरा वर्णन नहीं हो सकता। श्रीमान अवतार सिंह जी भी बार बार संगत के लिए धन्यवाद देते रहे। इंडिया में सदा महोत्सव पर वा और संगत में आने की भी गहरी इच्छा प्रगट की। अपनी माता जी को फोन करने में लापरवाही का भी बड़ा दुख प्रगट किया। खुशी की बात है कि श्रीमान जी के कहने पर अवतार सिंह जी ने अपनी माता जी को लम्बा फोन किया, माता धन्य धन्य हो गई। अफसोस! उसके दो दिन बाद उनका देहान्त हो गया। अपने पिता के उपकार को अनुभव किया कि किस प्रकार उन्हें पढ़ाने के लिए मोगा में मकान लिया। यह ब्यान करते हुए उनका दिल भर भरकर आ रहा था। उनकी बेटी ने भी अंग्रजी में उपकार लिखे जो अनुवाद करके दिए जाएंगे।

आख़िरी रात सोने से पहले बीबी भरपूर, डा० सतिन्द्र सब बच्चे श्रीमान जी के इर्दगिर्द बैठ गए और धन्यवाद देने लगे और अपने अपने भले के लिए सोचते रहे।

डाक्टर सतिन्द्र जो अवतार सिंह जी के दामाद हैं खुशी खुशी आखिरी दिन एअरपोर्ट पर छोड़कर आए। स्वंय समान आदि उठाकर चैकइन करवा कर गए।

यह सब संग्राम सहायकारियों की सहायता से

विशेष कर डा० देव बराड़ जी ने हवाई टिक्ट पर 11-1200 डालर खर्च किए इस सब के लिए जितना भी धन्यवाद दिया जाए कम है। अवतार सिंह जी की बेटी का भाव प्रकाश अनुवाद करके नीचे दे रहे हैं:-

सत्कार योग्य श्रीमान जी,

मुझे समझ नहीं आती के मैं कैसे शुरू करूं या कहां से शुरू करूं। जब मैंने सुना कि आप हमें विजिट करने आ रहे हैं, तो मुझे बेहद खुशी हुई कि हमें इतने वर्षो के बाद आपके दर्शन करने का अवसर मिलेगा। पता नहीं मैं कैसे express करूं कि आपके साथ हमारे परिवार का स्पैशल रिश्ता है। हम आपको अपने दादा जी की तरह प्यार करते हैं। जब मम्मी ने बताया कि आप सभाएं कराएंगे तो दिल में यही ख़्याल गुजरा कि हमें घण्टा भर बैठना पड़ेगा, और समझ कुछ भी नहीं आएगा। पर मुझे मेरी हैरानी की कोई सीमा नहीं कि यह सभाएं हमारे लिए कितनी लाभदायक हो रही हैं। इन सभाओं ने हमें अपने व्यवहारों के प्रति सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। मेरा ध्यान मेरे अपनी तरफ गया कि मैं कैसा जीवन व्यतीत कर रही हूं। मैं पिछले कुछ वर्षो से अपने आप में नाखुश रहती थी और कोई आशा नहीं रही थी कि कोई भलाई आ सकती है और सम्बन्धों में कुछ सुधार हो सकता है। परन्तु आपसे यह सुनकर कि जीवन का क्या लक्ष्य है, और हमें अपने आपको कैसे सुधारना चाहिए, मैं आशावान हो गई हूं। ज़िन्दगी में पहली बार मुझे अपने भीतर ego नज़र आई है। अपने भीतर गुस्सा भरा हुआ मालूम होता है। ज़िन्दगी अपने ही स्वार्थ के इर्द गिर्द धूम रही है। हमने देव समाज को भुला रखा है। कैसे एक एक सभा हमारे भीतर सवाल खड़े कर देती है। कैसे टॉच की तरह यह हमारे भीतर रोशनी मारती है, जिससे हमें जीवन की समस्याएं नज़र आई हैं, जिनको सुलझाने के हल नज़र आए हैं। जीवन अर्थपूर्ण बनता है और सम्बन्ध मिठास और हमदर्दी भरपूर बनते हैं।

हम बड़े ही खुशकिस्मत हैं कि श्रीमान जी की संगत हमें प्राप्त हुई है। यह हमारे प्रति इतना फिकर रखते हैं। यह चाहते हैं कि हम अच्छे इन्सान बनें। ऐसा बहुत लम्बे समय के बाद हुआ है। मेरे हृदय में बड़े प्रश्न उठ रहे हैं। अपनी बहुत सी बातें नज़र आई हैं कि जिनके विषय में बहुत सोचने और समझने की अवश्यकता है। मैं अब देव समाज की पुस्तकें पढ़ा करूंगी ताकि अपने आपको सुधार सकूं। श्रीमान जी के सम्पर्क में रहने का यत्न करूंगी। अगले वर्ष भी ऐसी सभाओं का इन्तज़ार रहेगा। मैं प्रार्थना करती हूं कि दिल की ऐसी अवस्था बनाने रखने में सफल हो सकूं। मैं अपने जीवन सम्बन्धी अवश्य सोच विचार और संग्राम करूंगी।

अब मुझे एहसास हुआ है कि सत्संग हमारे लिए कितना अवश्यक है। इसका जीवन पर कितना अच्छा प्रभाव पड़ता है। हमारा जीवन कैसा चाहिए, इससे अपने आपको बहुत दूर अनुभव करती हूं।

श्रीमान जी, मैं आपका शुक्रिया अदा नहीं कर सकती जो आपने हमारे लिए समय निकाला। हमारे लिए इतना दूर सफर किया, इस उमर में केवल इसलिए कि हम अपने आपको बेहतर बना सकें। मैं वायदा करती हूं कि प्रतिदिन अपने जीनव का विश्लेशन करने के लिए समय निकालूंगी पुस्तकों का पाठ करूंगी। मैं हररोज़ अपनी दैनिक क्रयाओं पर विचार करूंगी। कि मेरा व्यवहार पहले से सुधर सके। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने 3-4 सभाएं इण्डियाना पुलिस में अपने परिवार को लेकर कराई। जिसमें उनके बेटा बेटी और उनके बच्चे शामिल हुए। 2-3 सभाएं सुरजीत जी और केवल अपने बेटे को लेकर कराई। सबने मिलकर गुरू महाराज के भजनों

का गान वा जय ध्वनि की। प्रदेश में गुरू महाराज की जय ध्वनि से बहुत सन्तुष्टि मिलती थी। श्रीमान जी अपने बेटे के साथ कई बार बहुत लम्बी हितकर बातचीत भी करते रहे।

भारत में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने श्रीमान जी की गैर हाज़री में सख़्त गर्मी में जून के महीने में **पदमपुर वा मल्लेका** में शुभ संग्राम किया। 18 जून को वह पदमपुर पहुंचे। देव धर्म मिशन के मन्दिर में सभाओं का प्रोग्राम रखा गया। यहां रहकर उन्होंने 24 जून तक सभाएं कराई। सुबह 8.30 बजे और रात को 9 बजे हररोज़ सभाएं होती रही। इन सभाओं में गंगानगर से श्रीमान गोपाल कृष्ण जी और गज सिंह पुरा से श्रीमान खेमचन्द जी के पिता जी कई सभाओं में शामिल हुए। तीन चार पति पत्नी भी आकर सभाओं में शामिल हुए। कई नए जन भी आए। सभाएं प्राय: भिन्न सम्बन्धों को मुख्य रखकर कराई गई। जो जन लगातार सभाओं में आते रहे, उन्हें अवश्य लाभ हुआ। चार जनो ने भिन्न भिन्न दिनों में संगत में मिष्ठान भी बांटा। डाक्टर मुन्शा सिंह जी हमेशा की तरह सभाओं के विषय में लोगों को सूचित करते रहे। एक दम्पति ने ज़ोर देकर घर खाना खिलाया और एक जन ने मन्दिर में लाकर खाना खिलाया। मन्दिर के लिए और पदमपुर आश्रम के लिए अच्छा दान प्राप्त हुआ। 25 जून को श्रीमान जी वापिस आए और यह हितकर संग्राम कुछ सफल रहा।

28 जून से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने एक हफ्ता मल्लेका में शुभ संग्राम किया। देव धर्म मिशन के मन्दिर में सुबह शाम 8.30 बजे सभाएं होती रही। 4 जुलाई तक देव धर्म की सम्बन्ध तत्व की शिक्षा पर सभाएं करवाई गई। भिन्न भिन्न नीच सुख अनुराग और घृणाएं कैसे हानि, दुख और विनाश करती हैं, मनुष्य अपने सम्बन्धों में पाप वा अपहरण मूलक गतियां करके अपने जीवन का नाश करते है, कैसे परम पू० भगवान देवात्मा अपने देव प्रभावों का दान देकर सम्बन्धों के अन्मेल वा नर्क को दूर करते है। मनुष्य को धर्म के मार्ग पर चलाते हैं। इन विषयों को लेकर सभाएं हुई। केसूपुरा से भी धर्म सम्बन्धी कारों, मोटर साईकलों पर सभाओं में बड़े उत्साह के साथ पहुंचते रहे। बहुत अच्छी गिणती में सत्संगी लाभ उठाते रहे। एक एक सभा में 60 के लगभग भी हाज़री हो जाती रही। श्रीमान जी 2-3 दिन पहले आना चाहते थे, परन्तु धर्म सम्बन्धियों के कहने पर 2-3 दिन और रुक गए। इस सारे शुभ संग्राम के लिए श्रीमान जी गुरु को धन्यवाद देते हुए वापिस तलवण्डी साबो पहुंच गए। धर्म सम्बन्धियों ने चन्द हज़ार रु० मन्दिर के लिए दान में दिए।

सूचना

सब पाठकों के सूचित किया जाता है सितम्बर महीने की 19 तारीख़ की सुबह से देव आश्रम (देवी नगर) डेराबसी चण्डीगढ़ में विशेष सत्संग रखा गया है। यह सत्संग 8 दिन 26 सितम्बर तक चलेगा।

26 सितम्बर की शाम से सत्य धर्म बोध उत्सव अपने निरधारित प्रोग्राम के अनुसार मनाया जाएगा।

वार्षिक मूल्य 50 रूपये

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सत्य धर्म बोध उत्सव

सन्मान के योग्य श्रीमान/श्रीमति..... जी,

सत्य देव की जय

आपको यह जान कर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव इस वर्ष भी हर वर्ष की तरह पूरे चावभाव से 26 सितम्बर 2014 से 28 सितम्बर 2014 तक मनाया जा रहा है। इस वर्ष यह मुबारक उत्सव देव आश्रम निकट डेराबस्सी में गत महोत्सव वाले स्थान पर ही रखा गया है। इस उत्सव से पहले 8 दिन का विशेष सत्संग (19 सितम्बर 2014 की सुबह से 26 सितम्बर 2014 की सुबह तक) रखा गया है। आपकी सेवा में पुरज़ोर प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं ऐसे शुभ अवसर का लाभ उठाएं, बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी अधिक से अधिक संख्या में साथ लाकर सच्चे पुण्य के भागी बनें। सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा 26 सितम्बर शाम 4.30 बजे आरम्भ होगी।

नोट:- देव आश्रम चण्डीगढ़ अम्बाला जी.टी. रोड पर डेराबस्सी से अम्बाला की तरफ प्राय: 3 किलोमीटर की दूरी पर गलास पैलेस (Glass Palace) के पास स्थित है।

मौसम अनुकूल यात्री अपने ओड़ने के लिए उचित वस्त्र ज़रूर लेकर आएं, कृपा होगी।

प्रोग्राम

26 सितम्बर शुक्रवार

प्रवेश सभा : 4:30 बजे शाम

विषय : सत्य धर्म बोध की विशेषता।
यात्रीयों का स्वागत।
सभा से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें।
अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

27 सितम्बर शनिवार

पहली सभा : 9.00 बजे सुबह

विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।

दूसरी सभा : 11:00 बजे

विषय : स्वास्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।

तीसरी सभा : 4:30 बजे

विषय : भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज।

28 सितम्बर इतवार

पहली सभा : 8.30 बजे सुबह

विषय : भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज, इस सम्बंधी हमारी जिम्मेवारियां। इस कारज के लिए धन और जन की अपील।

दूसरी सभा : 10.00 बजे

विषय : सभाओं से उठाए हुए लाभ का यात्रियों की ओर से वर्णन।

सन्मान भाव से प्रार्थी
बलदेव सिंह मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts